# 'मध्या' की सफलता का सफर आसान नहीं था
# पर हिम्मत से कामयाब हुआ-सुशील अग्रवाल

**मैं सुशील अग्रवाल हूँ,**

मैं सुशील अग्रवाल, साल 1991-92, जियॉलॉजी में एम.एस सी कर नौकरी की तलाश और प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में लग गया. अथक मेहनत और संपूर्ण प्रयास से भी कोई जगह नहीं मिल सकी. मन निराशा से भरा था, परिवार पर अपने आपको भार समझने लगा था. निराशा के दौर में भी दिल कहता था- सुशील तुम किसी और कार्य के लिए बने हो. पिताजी ने कई बार कहा सरकारी विभाग के लिपिक की नौकरी का प्रयास करो तो वहाँ सफलता मिल सकती है। लेकिन स्वभाव के अनुरुप मैंने कभी उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया.आकाशवाणी-दूरदर्शन में कार्य किया कुछ छोटे-मोटे व्यापार किए पर मेरी छवि के अनुरूप नहीं लगे दिनभर मन में विचारों का अंबार लगा रहता था. खुद को सवालों से घिरा पाता था, जवाबों के लिए खुद ही कलम थाम ली. कागज पर लिखने लगा तो एक एक शब्द सुंदर माला के रूप में बंधने लगा... कविता जन्म लेने लगी.

उन्हीं दिनों एक साथी ने बताया कि माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता संस्थान का एक विज्ञापन आया है जिसमें पत्रकारिता एवं समाचार पत्र प्रबंधन का कोर्स शुरू हो रहा है. मन उस तरफ आकर्षित हुआ तो लगा भी कि कहाँ मैं विज्ञान का छात्र कहाँ पत्रकारिता और समाचार प्रबंधन? लेकिन प्रतियोगी परीक्षा में चयन नहीं हुआ तो सोचा खाली रहने से अच्छा है कोई कोर्स कर लिया जाए. तो जाहिर है समाचार प्रबंधन में प्रवेश ले लिया. माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय ने मेरी सोच को आकार दिया, विचारों को तराशा और भाषा पर भी पकड़ बनने लगी.

उस समय विश्वविद्यालय भरत नगर गुलमोहर में एक छोटे से परिसर में लगता था और मेरा घर न्यू मार्केट के पास था. मिनी बस से कैम्पियन स्कूल ग्राउंड पहुंचता था वहाँ से 2 किलोमीटर कच्चे रास्ते चल कर पैदल चलता था. एक हीरो पुक गाड़ी जिद से खरीदी. मध्यमवर्गीय परिवार की जद्दोजहद में पिताजी द्वारा खरीदी गई वह गाड़ी मेरे लिए वरदान बन गई.

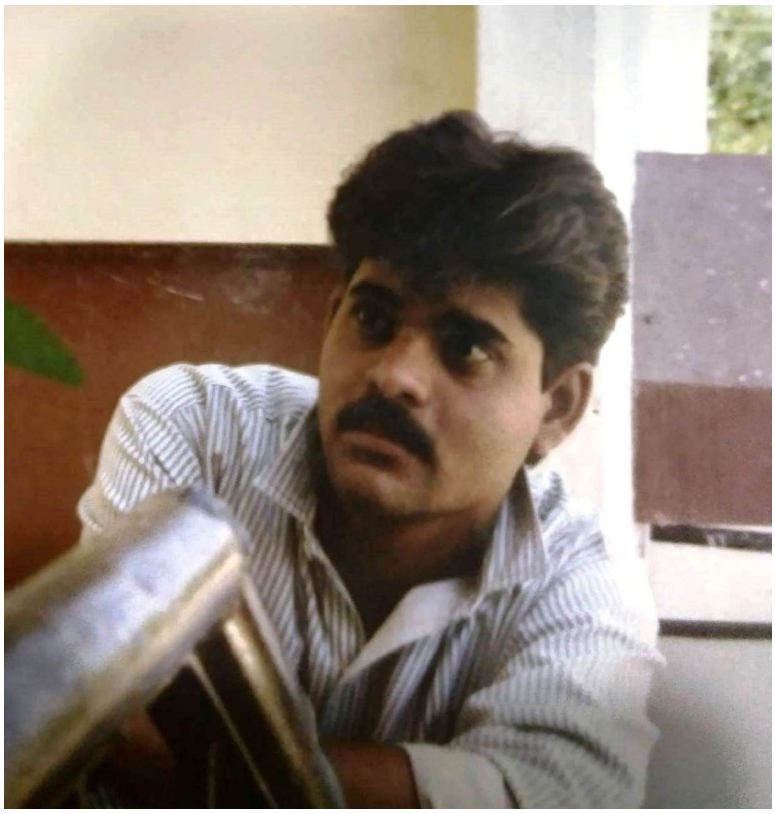

समाचार पत्र प्रबंधन पढ़ाई के दौरान मिलनसारिता और वाक्पटुता के चलते अन्य कोर्स के विद्यार्थियों से भी घनिष्ठ मित्रता हो गई. माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के वर्तमान के कुल गुरु विजय मनोहर तिवारी, श्यामलाल यादव, ऋतेन्द्र माथुर, सुधीर निगम, आशुतोष, राखी तिवारी, विश्वास तिवारी, आलोक त्रिपाठी, विभु जोशी जैसे कई अनमोल हीरे उनमें शुमार हैं.

अपनी चुटीली-चटपटी बातों से बहुत जल्दी सबके बीच लोकप्रिय हो गया. मुझे याद है विश्वविद्यालय द्वारा एक शैक्षणिक कार्यक्रम के अंर्तगत छात्रों को हैदराबाद इनाडू अखबार के आफिस ले जाया गया. मालिक रामोजी राव के साथ प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल कृष्णकांत से बातचीत का अवसर दिया गया. पत्रकारिता के छात्रों ने सवाल किए परंतु समाचार प्रबंधन विषय की तरफ से सिर्फ मैंने सवाल पूछा राज्यपाल महोदय ने मेरे प्रश्न की तारीफ की.

विश्वविद्यालय में मैं हमेशा एक शरारती और बदमाश छात्र माना जाता था जो मेरे हिसाब से मेरी उम्र की चंचलता थी. विश्वविद्यालय द्वारा समाचार प्रबंधन की मुख्य परीक्षा आयोजित हुई मैं उन छात्र में था जो कम क्लास अटेंड करता,बातें ज्यादा करता.अक्सर टपरी पर पाया जाने वाला यही सुशील अग्रवाल समाचार प्रबंधन की परीक्षा का रिजल्ट आने पर क्लास में प्रथम स्थान पर आया.

जब नवभारत के संदीप माहेश्वरी ने प्रबंधन की एक क्लास कैम्पस की तरह ली तो सिर्फ मुझे नौकरी का प्रस्ताव दिया. 1800 रुपये के वेतन पर प्रसार विभाग में कार्य़ करने को कहा और यहीं से शुरू हुआ मेरे जीवन का नया सफर...

नवभारत में मुझे प्रसार विभाग से विज्ञापन विभाग में पदोन्नत किया गया. सैलरी बढ़कर 2500 रुपये हो गई. मार्केटिंग के क्षेत्र में कार्य करते हुए स्वयं को निपुण बना रहा था तब ही मेरे काम की प्रशंसा होने लगी थी. समाचार प्रबंधन के साथी विश्वास तिवारी ने कहा कि दैनिक नईदुनिया आकर उनका सहयोग करुं.नईदुनिया अखबार में अच्छा काम किया उसी दौरान पत्नी अपराजिता और मैंने शादी करने का निर्णय लिया उस समय वेतन 4000 रुपए था. पत्नी प्रतिष्ठित पारिवारिक पृष्ठभूमि की थी. एक छोटे से कमरे हमारी शुरूआत हुई. मैंने बिना यह सोचे कि आगे खर्च कैसे निकलेगा नईदुनिया की नौकरी छोड़ दी और अपनी विज्ञापन ऐजेंसी की शुरूआत की.

बहुत सारी परेशानी आई. मन विचलित हुआ. कई बार ऐसा लगा कि मैं इस काम को नहीं कर सकूंगा वापस नौकरी कर लेता हूँ फिर विश्वविद्यालय में बोये बीज पनपे और मेरे अंदर लड़ने की क्षमता ने मुझे से रुकने नहीं दिया.

मेहनत रंग लाई. मेरी विज्ञापन ऐजेंसी का टर्नओवर 5 लाख से 50 लाख पहुंच गया.निरंतर काम बढ़ता रहा और मध्या एडवर्टाइजिंग का स्वरूप बदला. मध्या एडवर्टाइजिंग फर्म से कंपनी के रुप में अस्तित्व में आई. इस दौरान हमने अपना एक मकान और एक आफिस खरीदा. व्यापार 25 से 30 करोड़ के टर्नओवर पर आ गया.

जब व्यक्ति आगे बढ़ता है तो और संभावना तलाशता है. उसके रिस्क लेने में भी इजाफा होता है. जब मेरी कंपनी का टर्नओवर 50 करोड़ के आसपास था तब मैंने राह बदल ली और रियल ऐस्टेट में कदम रखा जो मेरे जीवन का सबसे गलत निर्णय था.

ऐजेंसी के कार्य पर ध्यान नहीं दे पाया साथ ही रियल ऐस्टेट का अनुभव और जानकारी न होने से रियल ऐस्टेट के कारोबार में लंबे नुकसान में चला गया. पार्टनर पर निर्भरता और उससे मिले धोखे के कारण एक ऐसे रास्ते आकर खड़ा हो गया कि मेरी निर्णय लेने की क्षमता खत्म हो गई और अपने आप से डर गया. अंतत: कई माह की उदासीनता से बाहर निकलकर मध्या एडवर्टाइजिंग कंपनी को फिर से स्थापित करने का कार्य शुरू किया औऱ आज 10 साल बाद मध्या एडवर्टाइजिंग को उसी स्थान पर लाकर खड़ा किया जहाँ मध्या के नाम से सुशील अग्रवाल को पहचाना जाता था.

आज मध्या एडवर्टाइजिंग कंपनी लोगो के दिलो में बसी हुई है और उसने वो सब हासिल किया जिसकी वह हकदार  है...यह सब मैंने नहीं ईश्वर के दिए हौसले ने ही किया है...

आज मुझे कामयाब व्यक्ति माना जाता है.. मुझे याद आता है बस यही शेर कि

मेरी बुलंदी पर हैरान हैं बहुत लोग
किसी ने मेरे पांव के छाले नहीं देखें...

**विश्वविद्यालय बैच**

पत्रकारिता एवं समाचार पत्र प्रबंधन पाठ्यक्रम (1992-93)

**सुशील अग्रवाल**